6

मन में ''शुद्ध करने वाला चश्मा''

(मत्ती 5:8)

हम छठे धन्य वचन ''धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे'' (मत्ती 5:8) पर आ गए हैं। इस धन्य वचन को ''पवित्र शास्त्र'' के पूरे दायरे में कहीं भी पाए जाने वाले सबसे ''महान बोलों में से एक'' कहा गया है।[1] निश्चित रूप में यह पवित्र शास्त्र के सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण वाक्यों में से एक है। मेरे इन पाठों को तैयार करने के समय हर धन्य वचन ने मुझे सचेत कराया कि मुझ में उन चीज़ों की कितनी कमी है जो मुझे में होनी चाहिए थी। परन्तु किसी ने भी मुझे इसकी तरह दोषी नहीं ठहराया कि ''धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं ...।'' मेरी सबसे बड़ी लड़ाई अपने मन से ही होती है। इस धन्य वचन का अध्ययन करते हुए शायद आपको भी यह प्राश्चित में घुटनों तक ले आए।

''धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं ...।''

''मन'' का क्या महत्व है?

कहते हैं कि मत्ती 5:8 में हमें मसीहियत का सार मिलता है। क्योंकि मसीहियत पहले और सर्वप्रथम मन का धर्म है। यीशु ने कहा कि हमें अपने पूरे मन से ईश्वर से प्रेम रखना आवश्यक है (मत्ती 22:37), हमें मन से क्षमा करना आवश्यक है (18:35)। और हमें वचन को ''भले और उत्तम मन में'' ग्रहण करना आवश्यक है (लूका 8:15)। पौलुस ने लिखा, ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी *मन से* उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे'' (रोमियों 6:17)। ''मन से'' वाले धर्म के महत्व की अतिश्योक्ति नहीं हो सकती। परमेश्वर ने शमूएल को बताया, ''क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है'' (1 शमूएल 16:7; देखें नीतिवचन 21:2)। सुलैमान ने लिखा, ''सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है'' (नीतिवचन 4:23)।

कई लेखकों का मानना है कि मन के शुद्ध होने की बात कहते समय यीशु सच्चे धर्म को उस धर्म से अलग कर रहा था जो यहूदी मत में माना जा रहा था। फरीसी लोग बाहरी संस्कारों तथा औपचारिक शुद्धता पर ज़ोर देते थे, जबकि मन को नज़रअन्दाज़ कर रहे थे। इन लोगों से यीशु ने कहा, ''हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी ठीक ही की है: 'ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है' '' (मत्ती 15:7, 8; देखें यशायाह 29:13)। प्रभु ने फिर कहा:

हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय, कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर, असंयम से भरे हुए हैं। ...

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो (मत्ती 23:25-28)।

परन्तु हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि बाहरी दिखावे पर ध्यान देने और मन को नज़र अन्दाज करने के दोषी केवल फरीसी ही हैं। मसीह की देह के अंगों के रूप में हम भी भ्रम की बाहरी अभिव्यक्तियों पर ज़ोर देने के दोषी हो सकते हैं जबकि मन को नज़र अन्दाज करते हैं। बाहरी अभिव्यक्तियां आवश्यक तो हैं पर यदि वे ''मन से'' न हों तो उनका कोई महत्व नहीं।

''मन'' किसे कहा गया है?

शायद हमें यह तय करने के लिए कि वास्तव में शुद्ध किसे होना चाहिए। ''मन'' क्या है? मत्ती 5:8 वाला ''मन'' शब्द *kardia* से लिया गया है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''cardiac'' शब्द मिला है जिसका अर्थ ''हृदय का या निकट'' है।[2] शारीरिक दिल शारीरिक जीवन का मुख्य अंग है (देखें लैव्यव्यवस्था 17:11)। ''एक आसान बदलाव से यह शब्द विवेकी और भावनात्मक तत्वों दोनों में मनुष्य की सम्पूर्ण मानसिक और नैतिक गतिविधि के लिए बन गया।''[3]

आम तौर पर हम मन को भावना का केन्द्र मानते हैं, जो कि यह है। हम परमेश्वर से अपने सारे मन से प्रेम करते हैं (लूका 10:27), और हमें ''मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो'' (1 पतरस 1:22)। परन्तु मन के लिए बाइबल का इस्तेमाल भावनाओं से बढ़कर भी है। इस शब्द का इस्तेमाल कई बार बुद्धि के लिए भी किया जाता है। यीशु ने उनकी बात की जो अपने मनों में बुरा *सोचते* थे (मत्ती 9:4)। फिर से ''मन'' शब्द का इस्तेमाल इच्छा के साथ यानी मन के निर्णय लेने वाले भाग के सम्बन्ध में किया गया। इब्रानियों 4:12 ''मन की *भावनाओं* और विचारों'' की बात करता है। बाइबल वाला ''मन'' मनुष्य की भावनाओं, उसके विचारों और उसकी प्रेरणाओं का आधार है। हमारे वचन पाठ में ''मन'' शब्द का इस्तेमाल उस *सब* के लिए किया गया है जो व्यक्ति के भीतर है। यह व्यक्ति का केन्द्र यानी उसके व्यक्तित्व का केन्द्र है।

''शुद्ध'' होने का क्या अर्थ है?

यीशु कह रहा था कि हमें अपने अस्तित्व के केन्द्र में शुद्ध होना आवश्यक है। ''शुद्ध'' का अनुवाद *katharos* से किया गया है। नये नियम में *katharos* शब्द सताइस बार मिलता है।[4] और आम तौर पर इसका अनुवाद ''शुद्ध'' या ''साफ़'' किया गया है।[5] इस शब्द का इस्तेमाल शारीरिक या औपचारिक शुद्धता के लिए किया जा सकता है (देखें मत्ती 23:25), परन्तु यीशु के मन में भीतरी सफ़ाई थी। *Katharos* में एक दूसरे से मेल खाती कम से कम तीन अवधारणाएं हैं जिनमें से दो की चर्चा पहले की जा चुकी है।[6]

(1) ''सफ़ाई।'' *Katharos* का इस्तेमाल दाग वाले कपड़े के लिए किया जाता था जिससे धोकर साफ़ किया गया है। शुद्ध मन साफ़ मन है। इब्रानियों के लेखक ने कहा, ''सबसे मेल

मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को न देखेगा'' (इब्रानियों 12:14)।

(2) ''शुद्धता।'' *Katharos* का इस्तेमाल किया जाता था जिसे फटका गया हो ताकि उसमें से भूसी को उड़ाया जा सके। शुद्ध मनों को अशुद्धता से मुक्त किया गया है। दाऊद ने प्रार्थना की, ''... मुझे शुद्ध कर ['मुझे अशुद्धता से मुक्त कर'; KJV], तो मैं पवित्र हो जाऊंगा'' (भजन संहिता 51:7क)। *Katharos* में सफ़ाई और शुद्धता की दोनों अवधारणाएं हैं, पर दोनों में से एक काम का है।

(3) ''लगन।'' शुद्ध दूध पूरे का पूरा दूध होता है और उसमें पानी नहीं मिलाया गया होता। शुद्ध सोना खरा सोना होता है उसमें हर प्रकार का कूड़ा कचरा निकाला गया होता है। शुद्ध मन मिले जुल उद्देश्यों से नहीं होता। बाइबल के शब्दों में मिले जुले उद्देश्यों वाले को ''दो मन'' और ''दोचित्ते'' कहा गया है। भजन संहिता ''दो रंगे'' लोगों की बात करता है (भजन संहिता 12:2)। याकूब ने ''दोचित्ते'' लोगों की बात की (याकूब 4:8)। दाऊद ने प्रार्थना की, ''मुझ को *एकचित्त* कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूं'' (भजन संहिता 86:11ग)।

''सफ़ाई'' और ''शुद्धता'' के मन के टैस्टों पर मैं अधिक अंक नहीं लेता। मन से अशुद्ध विचारों को बाहर रखना कठिन है। परन्तु जब ''सच्चाई'' के टैस्ट में मैं सचमुच फेल हो जाता हूं क्योंकि ऐसा करना अपनी प्राथमिकताओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए है। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''अपने ही उद्देश्यों को जांचना'' भयभीत करने वाली और अपमानजनक बात है, क्योंकि इस संसार में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें हम में से बेहतरीन लोग भी पूरी तरह से बिना मिलावट के कर सकते हैं।[7] क्या आप बिना मिलावट के उद्देश्यों के सम्बन्ध में अपनी जांच करना चाहते हैं? तो अपने आप से इस प्रकार के प्रश्न को पूछें। ''यदि मुझे प्रभु के लिए काम करने के लिए कोई पहचान न मिले तो''; यदि दूसरे लोग मेरा श्रेय ले लें?''; ''यदि मुझे सही काम करने के लिए आलोचना सहनी पड़े?'' जब हमारे साथ ऐसी घटनाएं होती हैं तो क्या हम छोड़ जाने की परीक्षा में पड़ते हैं?

हम में से कइयों को मानना पड़ेगा कि हमारे मन उतने शुद्ध नहीं हैं जितने होने चाहिए। हमारे मन शुद्ध कैसे हो सकते हैं? शायद हमें उसकी आवश्यकता है जिसे ''साफ़ करने वाला अच्छा चश्मा'' कहा जाता था। सर्दी के अन्त में बहार आ जाती है तो खिड़कियां खुल जाती। कम्बल झाड़ने के लिए बाहर निकाले जाते हैं। गद्दों और रजाइयों को धूप में निकाला जाता। घर को ऊपर से लेकर नीचे तक साफ़ किया जाता। हमारे मनों की ऐसे ही सफ़ाई होनी आवश्यक है।

बेकार बोलने वाला होने का जोखिम लेते हुए मैं फिर से कहना चाहता हूं कि पिछले धन्य वचनों में पाए जाने वाले गुणों को बढ़ाने का आरम्भिक स्थान है। यदि हम अपनी आत्मिक आवश्यकता को समझ लें (पहला धन्य वचन), अपनी आत्मिक वंचितता पर शोक करें (दूसरा), दीन और आज्ञा मानने वाला मन रखें (तीसरा), और परमेश्वर के साथ सही होने की भूख रखें (चौथा) तो यह हमें दयालु (पांचवां), और मन के शुद्ध (छठा) बनाने में दूर तक जाएगा। इसके अलावा मैं कुछ और सुझाव देना चाहता हूं। जैसा कि सभी धन्य वचनों में है, कुछ कार्य ऐसे हैं जो हमें ही करने होंगे और कुछ ऐसे हैं जिन्हें केवल परमेश्वर कर सकता है।

मैं उन कार्यों से आरम्भ करता हूं जिन्हें *हम* कर सकते हैं। जैसा कि पहले ही बताया गया

है, सुलैमान ने लिखा, ''सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है'' (नीतिवचन 4:23)। याकूब ने अपने पाठकों को आज्ञा दी, ''अपने हृदय को पवित्र करो'' (याकूब 4:8)। इन दोनों लेखकों ने मसीही लोगों को परमेश्वर द्वारा स्वीकृत मन पाने के लिए जो कुछ वे कर सकते वह करने की चुनौती दी। *आप और मैं* अपने मन को पवित्र करने के लिए क्या कर सकते हैं? पहले तो अपनी आवश्यकता को मानने और अपने मन को पूरी तरह से पवित्र करना सहायक होता है।

फिर हमें अपने मनों को परमेश्वर के वचन से भरना होगा। भजनकार ने लिखा है, ''जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से'' (भजन संहिता 119:9)। यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है शुद्ध हो'' (यूहन्ना 15:3)। हमें वचन को पढ़ना, वचन का अध्ययन करना, वचन पर मनन करना और फिर वचन को मानना आवश्यक है। पतरस ने अपने पाठकों से कहा, ''तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है'' (1 पतरस 1:22क)।

अपने मनों को वचन से भरने के अलावा हमें सामान्य अर्थ में अपने मनों को अच्छे विचारों से भी भरना आवश्यक है। हमें चाहिए कि जो कुछ हम देखते और जो कुछ सुनते हैं उसके प्रति चौकस रहें।[8] पौलुस ने लिखा, ''... जो जो बातें पवित्र हैं, ... उन्हीं पर ध्यान लगाया करो'' (फिलिप्पियों 4:8)। अपने मन में अशुद्ध विचारों को आने से कोई नहीं रोक सकता, पर उसे चाहिए कि वह उन पर ध्यान न लगाए। कहते हैं, ''आप अपने सिर के ऊपर से पक्षी को उड़ने से तो रोक नहीं सकते, पर अपने सिर पर उसे घौंसला बनाने से अवश्य रोक सकते हैं।''

इस सब से सहायता मिलेगी, पर अपनी पूरी कोशिश कर लेने के बाद हमें मानना पड़ेगा कि हमारे मन वैसे नहीं हैं जैसे होने चाहिए। यिर्मयाह नबी ने लिखा, ''मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है'' (यिर्मयाह 17:9क)। अन्त में हमें अपने आपको परमेश्वर की दया पर छोड़कर प्रार्थना करनी होगी कि ''हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर'' (भजन संहिता 51:10क)। इस्राएलियों को दासता में दिलेर करने की कोशिश करते हुए यहेजकेल ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा बताई थी: ''मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा'' (यहेजकेल 36:26क)। जब हम यीशु में भरोसा रखने लगते हैं अनुग्रह में अपनी आवश्यकता को मान लेते हैं तो परमेश्वर विश्वास के द्वारा मन को शुद्ध के देता है (देखें प्रेरितों 15:9)।

''... क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।''

''धन्य [प्रसन्न] हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं ...।'' मन के शुद्ध होने का प्रसन्नता से क्या सम्बन्ध? यदि हमारे मन ईर्ष्या और द्वेष खाली हैं तो हमारे मन संतुष्ट होंगे। यदि हमारे मन घृणा से भरे हैं तो हम किसी को अपना शत्रु नहीं मानेंगे। जेम्स हेस्टिने ने लिखा है:

> [मन की शुद्धता] हमें पीड़ा अर्थात मन की भीतरी लड़ाई के हज़ार स्रोतों से मुक्त करती है ..., विवेक की दोष लगाने वाली आवाज़, चिन्ता से भरी सांसारिक परेशानी और चिन्ता ... क्रोध, द्वेष, [और] ... की कड़वाहट असंतुष्टि है।[9]

हमारे वचन पाठ में विशेषकर शुद्ध मन वाले लोगों का धन्य होना सीधे तौर पर उस प्रतिज्ञा से जुड़ा है ''क्योंकि वह परमेश्वर को देखेंगे।'' इससे बढ़कर रोमांचक प्रतिज्ञा नहीं हो सकती। प्राचीन समाजों की रीतियों के अनुसार राजा की हजूरी में आना और उसका चेहरा देखना सबसे बड़ा सम्मान माना जाता था।[10] बाइबल के अनुसार परमेश्वर की हजूरी में आने वाले लोग वे हैं जिनके मन शुद्ध हैं। दाऊद ने लिखा है, ''यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है? जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है'' (भजन संहिता 24:3, 4)।

शारीरिक रूप में देखने की योग्यता की बात करें तो सब में एक जैसी क्षमता नहीं है। मेरे भाई कोय रोपर को एक विरल किस्म का ग्लूकोमा है[11] जो उसकी नज़र को प्रभावित करता है। बहुत कुछ ऐसा है जिसे वह देख नहीं सकता। यह बुरा है, पर शायद उतना त्रासद नहीं जितना आत्मिक दृष्टि खो चुके लोगों के लिए जिनके मन अशुद्ध हो गए हैं। केवल शुद्ध मन वाले लोग ही परमेश्वर को देखेंगे।

परमेश्वर को यहां पर देखना

मैं फिर से सुझाव देना चाहता हूं कि यह प्रतिज्ञा इस जीवन में और इसके बाद भी लागू होती है। यहां और अब परमेश्वर को देखने की बात में हम समझते हैं कि हम उसे अपनी शारीरिक आंखों से नहीं देख सकते। वह आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और ''अदृश्य'' है (कुलुस्सियों 1:15)। उसने मूसा को बताया, ''तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता'' (निर्गमन 33:20)। यूहन्ना ने कहा, ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा'' (यूहन्ना 1:18क)। परन्तु हम, विश्वास की आंखों से परमेश्वर को देख सकते हैं। इब्रानियों के लेखक के अनुसार ''विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय ... है'' (इब्रानियों 11:1)। इसी लेखक ने लिखा कि मूसा विश्वास से ही ''अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा'' (आयत 27)। पौलुस ने कहा कि ''और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिनों की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:18)।

- विश्वास से, हम प्रकृति में परमेश्वर को देखते हैं (देखें भजन संहिता 19:1.)
- विश्वास से, हम परमेश्वर को इतिहास में अपने योजनाओं और उद्देश्यों पर काम करते देखते हैं।
- विश्वास से हम परमेश्वर को उन आशिषों में देखते हैं जो वह हमें देता है।
- हम उसे सामान्य भोजन के उपाय में, हमारे जीवनों को आशीषित करने के लिए हमें परिवार देने में और नये जन्मे बच्चे के चेहरे में देखते हैं (देखें याकूब 1:17क.)
- विश्वास से, हम परमेश्वर को अपने जीवनों में देखते हैं।
- विश्वास से, हम परमेश्वर को अपने जीवनों में, परेशानियों के हमें धमकाने पर भी उसके काम करने को देखते हैं (देखें रोमियों 8:28)।
- सबसे बढ़कर हम यीशु के निकट आकर, उसे और बेहतर ढंग से जानने के द्वारा

विश्वास से उसे देखते हैं।

हम में से अधिकतर लोग वही देखते हैं, जिसे देखने के लिए तैयार होते हैं। मेरी डैबी किसी पुराने, खण्डर घर को देखने पर उस घर को मरम्मत किए जाने के बाद की स्थिति में देखती है कि यह कैसा लगेगा। जब मैं किसी पुराने घर को देखता हूं, तो मैं उसे केवल एक पुराने घर के रूप में देखता हूं। डैबी कुछ ऐसा देखती है, जो मुझे दिखाई नहीं देता।[12] इसी प्रकार, इस जीवन में शुद्ध मन वाले लोगों को वह दिखाई देता है जिसे अशुद्ध मन वाले नहीं देख सकते। केवल शुद्ध मन वाले लोग ही परमेश्वर को देखने को तैयार हैं।

इसके बाद परमेश्वर को देखना

एक अर्थ में शुद्ध मन वाले लोग इस जीवन में परमेश्वर को देखते, पर मत्ती 5:8 की प्रतिज्ञा पूर्ण रूप में इस जीवन के बाद ही पूरी होती हैं। यूहन्ना ने लिखा, ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान है, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि *उसको वैसा ही देखेंगे* जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)। स्वर्ग में हमें राजा की उपस्थिति में ले जाया जाएगा और हम उसके चेहरे को देखेंगे। उस स्वर्गीय राज्य में ''स्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। और उसका मुंह देखेंगे'' (प्रकाशितवाक्य 22:3, 4क)।

कितनी अद्‌भुत प्रतिज्ञा है! वह दिन आ रहा है जिसमें वे लोग जिनके मन यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध किए गए हैं, हां हम ही, अपनी अशुद्धताओं और त्रुटियों के साथ, परमेश्वर को देखेंगे! अन्त में स्वर्ग लोग को बहाल कर दिया जाएगा (देखें प्रकाशितवाक्य 2:7) और परमेश्वर के साथ हमारी संगति वैसे ही होगी जैसे पहले स्वर्गलोक में आदम और हव्वा की थी।

सारांश

धन्य हैं वे लोग जिनके मन शद्ध हैं पौलुस ने तीमुथियुस को बताया: ''आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन उत्पन्न हो'' (1 तीमुथियुस 1:5क)। शुद्ध मन वाले लोग धन्य हैं क्योंकि ''वे परमेश्वर को देखेंगे।'' इस जीवन में हम परमेश्वर को विशवस की नज़र से देख सकते हैं पर आने वाले समय में हमसे आमने-सामने देखेंगे। इस जीवन में आने वाले लोग बाहरी कमरे में प्रतिक्षा कर रहे हैं, राजा के सामने जाने की उन्हें बड़ी उत्सुकता है!

क्या आपका मन शुद्ध है? यूहन्ना ने स्पष्ट कर दिया कि अशुद्ध मन और जीवन वाले लोग परमेश्वर को नहीं देख सकते: ''जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा और न उसको जाना है'' (1 यूहन्ना 3:6ख; देखें 3 यूहन्ना 11)। क्या आप प्रेमपूर्वक आज्ञा पालन की तरह परमेश्वर की संतान बन गए हैं कि अब आप जीवन के नये पन में चल रहे हैं (रोमियों 6:3-6, 17, 18)? शायद बीते समय में परमेश्वर के द्वारा आपके मन को शुद्ध किया गया था, पर परमेश्वर को देखने की आपकी नज़र धुंधली और कमज़ोर पड़ गई है। यदि ऐसा है तो प्रभु के पास वापस आ जाने का समय यही है (देखें गलातियों 6:1)। यदि परमेश्वर को देखने की आपकी तड़प में हम आपकी सहायता कर सकें तो कृपया हमें अवश्य अवसर दें।

टिप्पणियां

[1]डी. मार्टिन लायड-जोन्स, *स्टडीज़ इन द सरमन ऑन दि माउंट,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 106. [2]*दि अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी,* 4था संस्क. (2001), एस. वी. ''कार्डियाक।'' [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 297. [4]यह गणना ओकैंडस पर आधारित है, 2003 ओक ट्री, सॉफ्टवेयर, आई. एन. [5]रॉबर्ट यंग, *यंग'स अनेलेटिकल कॉन्कोर्डेंस टू दि बाइबल* (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, तिथि नहीं), 785. [6]अगली चर्चा के कुछ भाग विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1, दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 101 से लिए गए हैं। [7]वही., 102. [8]जहां आप रहते हैं उस समाज में इसे लागू करें। अमेरिका में अशुद्ध पुस्तकें, भद्दे टेलिविज़न कार्यक्रम और फिल्में और जान बूझकर उन लोगों से मिलना जिनकी भाषा गंदी है, हो सकता है। [9]जेम्स हेस्टिंग्स; जेम्स एम. टोल्ले, *दि बीटीट्यूडस* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: टोले पब्लिकेशंस, 1966), 67 में उद्धृत। [10]टोल्ले, 64.

[11]ग्लूकोमा आंख की पुतली में असामान्य उच्च दबाव से आख में आई गड़बड़ी होती है। कोय की यह स्थिति सम्भवतया बचपन में किसी घाव के कारण है। [12]एक और उदाहरण तारों को देखने का है। एक खगोलज्ञ और नाविक उन्हें हम से अलग देखता है जो केवल रौशनी के टिमटिमाने को सराहते हैं।